International Journal of Enhanced Research in Management & Computer Applications, ISSN: 2319-7471
Vol. 3 Issue 1, January-2014, pp: (1-6), Impact Factor: 1.147, Available online at: www.erpublications.com

महाकाली के विभिन्न प्रतिरूपों को रसों के द्वारा चित्रित

Rajesh Kumar Sharma

Assistant Professor, Department of Sculpture, College of Art, Chandigarh

---

नाट्यशास्त्र के छठे अध्याय में रसाध्याय की मान्यता प्रस्तुत की गई है, जिसमें यह उल्लेखन है कि जब मुनियों ने भरत मुनि से प्रार्थना की कि आप रसों के बारे में विस्तार से बतायें तब उन्होनें यह व्याख्या की ब्रहमा जी महात्मा हैं। ब्रहमा जी ने ही आठ रस बतलायें हैं। रसो को समझने के लिये कई उदाहरण नाट्यशास्त्र में उल्लेखित हैं। उन्हीं की विचारधारा को समझने के लिये मैं अपने इस शोध में देवी या माँ कि शक्ति के विभिन्न पतिरूपों को रसों के द्वारा चित्रित करने का प्रयास किया है। ब्रहम देव ने इन भावों को स्थाई को भाव कहा है। जिस प्रकार बीज से वृक्ष निकलता है और पुष्प फल के कम से बीच बनता दिखलाई देता है। उसी प्रकार की रस और भाव की स्थिति है अर्थात रस से भाव तथा भाव से रस। महाकाली को हमनें शक्ति एवं प्रकृति माना है। उसी प्रकार देवी के स्वरूप रसों से सुशोभित हैं। इन रसों के वर्ण के बारे में विस्तार से कलात्मक रूपों द्वारा नाट्यशास्त्र में व्याख्या की गई है।[1]

वर्ण

श्यामो भवति श्रृंगारः सितो हास्यः प्रकीर्त्तितः।
कपोतः करूणश्चैव रक्तो रौद्रः प्रकीर्त्तितः ।।
गौरो वीरस्तु विज्ञेयः कृष्णचैव भयानकः।
नीलवर्णस्तु बीभत्सः पीतश्चैवाद्भतो रसः ।।

व्याख्या

श्रृंगार का वर्ण होता है श्याम हास्य का सफेद, करूण का कपोत, रौद्र का लाल, वीर का वर्ण गौर (स्वर्णवर्ण) भयानक का वर्ण काला, विभत्स का नीला, और अद्भुत रस का पीला, शांत रस को मानने वाले आचार्यों ने शांत का वर्ण स्वच्छ माना है।

रस आठ हैं जो निम्न हैं।

रस : श्रृंगार, हास्य, करूण, रौद्र, वीर, भयानक, विभत्स, अदभुत, शान्त
स्थाई भाव : रति हास शोक क्रोध उत्साह भय घृणा विस्मय शम
श्रृंगार : श्रृंगारो नाम रतिस्थायिभावप्रभवः, उज्जवलवेषात्मकः यत्किचितल्लोके शुचि मेघ्यमुज्ज्वलं दर्शनीयं वा तच्छ्रगारेणोपमीयते। यस्तावदुज्ज्वलवेषः सा श्रृंगारवानित्युच्यते

व्याख्या : श्रृंगार उत्पन्न होता है रति नामक स्थाई भाव से इसका उज्जवल वेष होता है लोक में जो भी कुछ पवित्र उज्जवल और दर्शनिय होता है उसे श्रृंगार की उपमा दी जाती है। भारतीय संस्कृति में सुहागनों के लिये सोलह श्रृंगार बहुत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। देवी माँ को प्रसन्न करने के लिये जो प्रमुख चढ़ावा है बिन्दी, सिन्दूर, माँगटीका, अंजन, कर्णफूल, नथनी, हार, मेहन्दो, बाजुबंद, चूड़ियाँ, जूड़ामणी (केश सज्जा) आरसी, करधनी, पायल, बिछुआ, आल्ता, इत्रा एवंसाड़ी आदि देवी माँ अपने भव्य श्रृंगार में लाल साड़ी घने लम्बे बाल बड़े बड़े नेत्रों वाली एवं अच्छे गठोले बदन वाली जिसके माथे पर बड़ी सी बिन्दी एवं सिन्दूर शोभायमान होता है उसमें देवी एक शौभ्य रूप में दिखाई देती है। माँ काली को श्रृंगार में जवाकुसुम की माला सिन्दूर आल्ता बिन्दी साड़ी बेलपत्र की माला चमेली का तेल अधिक पसंद है एवं जो पूजा करा रहा है (यजमान) उसका खून भी माँ को चढ़ता है।

हास्य : विपरोतालंकारैर विकृताचाराभिधनवेषैश्च।
विकृतैरर्थविशेषैर्हसतीति रसः स्मृतो हास्यः।।

व्याख्याः अलंकारो की विपरीतता, आचार बोली और वेष की विकृतता तथ कुछ चेष्टाओं स प्रेक्षक में हँसी देखी जाती है, अतः इस रस की संज्ञा बनी हास्य रस। जिसका स्थाई भाव होता है हास इसका अनुभव ओंठ नासिका और कपोलो का स्पंदन आदि।

हास्य में कई रूप दृष्टिगोचर होते हैं जैसे माँ कालिका विष्णु को नींद से जगाकर या शुम्भ निशुम्भ को छल भरी हंसी से मोहित करती है और खुद को कौशिका दुर्गा या अम्बिका के सुन्दर आकार में प्रकट होती है। जिससे वह देवी से शादी करना चाहते हैं। एक और उदाहरण में जब देवी रूठ जाती है तो नटराज नृत्य करते हुए आनन्द ताण्डव करके मनाने की कोशिश करते हैं एवं उन्हें प्रसन्न करने के लिये चौपड़ भी खेलते हैं। अतं में मंद मुस्कान के साथ माँ मान जाती है। इससे भिन्न माँ का एक और हास्य रूप देखने को मिलता है। जब माँ की ममता की उल्लासमयी हंसी तब देखने को मिलती है जब यह सोचा जाता है [1]कि संसार में प्रथम पूजा किसकी होगी? जो पूरे ब्रह्मंड की परिक्रमा करके प्रथम आयेगा। गणेश शिव एवं पार्वती को ब्रह्मंड मानकर उन्हीं की परिक्रमा करते हैं यह देखकर देवी पार्वती मन ही मन मुस्कुराती हुई गणेश को देखती है। इनके अतिरिक्त जब हमने माँ को प्रकृति ही मान लिया तो वनस्पति देवी शाकुम्भरो के रूप में समस्त जग में प्रसन्नता से खिलखिलाती नज़र आती हैं।

करूण : इष्टवध्दर्शनाद् वा विप्रियवचनस्य सश्रंवाद् वापि।
एभिर्भावविशेषैः करूणरसो नाम संभवति।।

अर्थ : करूण रस पैदा होता है इष्टजनवध देखने से, विप्रिय वचन सुनने से या इसी प्रकार की अन्य घटनाओं सेजिसकी उत्पत्ति शोक नामक स्थाई भाव से होती है इसका अनुभव अश्रुपात विलाप मुख सुखना आदि। जब शिव ने गणेश का सिर धड़ से अलग किया एवं माता पार्वती को ज्ञात हुआ उस समय माता पार्वती करूणा भरा विलाप करती हैं और शोक मग्न हो जाती है। दूसरे उदाहरण में जब राजा दक्ष सभी देवताओं को बुलाते हैं किंतु शिव को ही नहीं बुलाते यह देखकर सती अश्रुपात करती हुई आत्महत्या कर लेती हैं।

रौद्र : ते ही स्वभावत एव रौद्राः। यस्मात्, बहुबाहवो बहुमुखाः बहुशीर्षाः प्रोद्धूत–विकीर्ण–पिंगलशिरोजाः, रक्तोद्वृतविलोचना भीमासितरूपिणश्चैव। यच्च किन्चित समारभन्ते स्वभावचेष्टितं वागंगदिकं तत् सर्वं रौद्रमेवैषाम।।

अर्थ :– वे स्वभाव से ही होते हैं रौद्र इसलिये कि उनकी भुजायें बहुत सी होती हैं। मुख भी बहुत से और सिर भी अनेक। केश उनके ऊपर उठे हुए और पीले पीले तथा बिखरे होते हैं आँखे लाल लाल होती हैं। और उनकी पुतलियां ऊपर घूमी रहती हैं। रूप होता हैं भंयकर और रंग होता है काला वे बाड़ी या अंगा की जो भी कुछ चेष्टायें करते हैं वे सब की सब रौद्र ही होती हैं। इसके बाद हम रौद्र रस को लेते हैं।

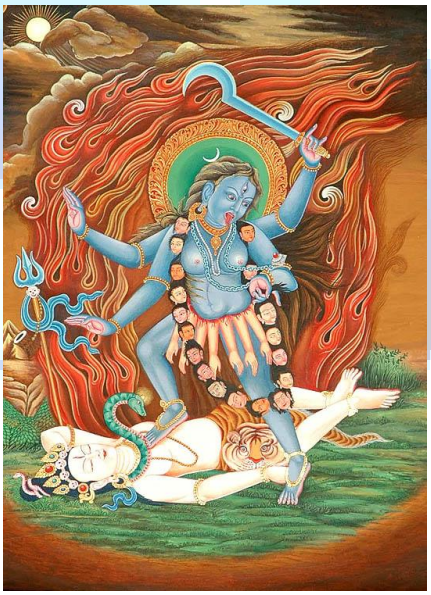

रौद्र रस रौद्र क्रोध को बनाता है स्थाई भाव। इसके जनक होते हैं राक्षस दानव आदि। इसका परिणाम होता है संग्राम। कार्य है शस्त्रा का आघात, खून बहना आँखे लाल होना आदि। माँ काली जब असुरों के उपद्रव से अत्याध्कि क्रोध के कारण उनका संहार करने चलती हैं तो उसकी लाल आँख, बिखरे बाल, बाहर निकले दांत, लपलपाती हुई लाल जीभ, मानव भुजाओं से निर्मित कुर्ता, मुण्डो की माला पहने हुए उनका विनाश करती है।

[1] Natyashastra, pg. No. 100, written by Rewaprasad Dwivedi

वीर : उत्साहा5घ्यवसायादविषादित्वादविस्मया5मोहात्।
विविधदर्थविशेषाद् वीररसो नाम संभवति।।

अर्थ : ऐसा उत्साह बनता है वीर रस जिसमें अघ्यवसाय अविषादित्व अविस्मय अमोह से हो पदार्थों का ज्ञान

वीर रस :–यह उत्साह रूपी स्थाई भाव से होता है इसका कार्य युध का सामर्थ एवं शत्रओं को भयभीत करना उनपर आक्रमण करके विजय प्राप्त करना। माँ दुर्गा दस भुजा रूप में महिषासुर का वध करती है। काली के रूप में चण्डमुण्ड का वध करके उपहार स्वरूप देवी को उसके सिर देती है देवी उसके साहसी कार्य के लिये देवी चामुण्डा की उपाधि देती हैं एवं रक्तदती के रूप में रक्तबीज का संहार करती हैं।

भयानक :– विकृतरवसत्त्वदर्शन–संग्रामारण्यशून्यगृहगमनात्।
गुरूनृपयोरपराधत् कृतकश्च भयानको ज्ञेयः।।

अर्थ :– विकृत स्वर के और विकृत चित्त के प्राणियों के दर्शन से संग्राम में जाने जंगल या शून्य में बने भवनों में प्रविष्ट होने तथा गुरू या राजा का अपराध बन जाने से जो भय होतो है उसे कहा जाता है। कृतक भय यह हुऐ भयानक के लिये अपेक्षित विभाव

भयानक रस : यह रस होता है भयानक नामक स्थाई भाव से। इसके कारण बनते हैं सनसान वन विकृत आवाजों का आना शमशान भूमि का दृश्य आदि। जैसेकि हीरापुर के पास एक योगिनी मंदिर हैं जिसमें नौ आले हैं जिनमें एक डाकिन की मूर्ति मानव सिर पर खड़ी है उसके एक हाथ में मुड़ा हुआ चाकू दूसरे हाथ में खोपड़ी है। मंदिर की सुरक्षा डरावने सिर वाले द्वारपाल की जोड़ी करती है। जिन्होंने सिर की माला एवं साँपो की पाजेब पहनी हुई है एवं एक कटा हुआ मानव सिर पकड़े हुए रास्ते में दो अन्य सिरों की मूर्तियाँ हैं जो एक खोपड़ी के कटोरे को पकड़े हुऐ हैं साथ में कुत्ता एवं गीदड़ है। इसके अतिरिक्त एक अन्य स्वरूप में देवी महाकाली जो शमशान काली के रूप में दायाँ पैर निकाले दाँये हाथ में तलवार थामें हुए भंयकर रूप में है उसकी तंत्रों के द्वारा पूजा की जाती है। काली दिखने में भयभीत करने वाली है उनके जंगली आँखें उनके रक्त से रंजीत जीभ, खूनी तलवार, राक्षस का कटा हुआ सिर, एवं कटे हुऐ सिर की करधनी पहने हुए अपने भयानक रूप में दिखती है।

वीभत्स :– मुखनेत्राविकूणनया नासाप्रच्छादनावनमितास्यैः।
अव्यक्तपादपतनैर्बीभत्सः सम्यगभिनेयः

अर्थ :– मुख और नेत्रों के विकूणन (बिचकाना), नासिका का सिकोड़ना और सिर झुकाना भी है। वीभत्स की उत्पत्ति में कारण। इसी प्रकार किसी भी स्पष्ट दिखाई न दे रही वस्तु पर पैर पड़ जाना आदि

वीभत्स :– वीभत्स तब होता है जिसका परिणाम घृणा रूपी स्थाई भाव से होता है। इसका अभिनय मूँह बनाना, खुजलाना, थूकना आदि। मरिअम्मा देवी की पूजा दक्षिण भारत में होतो है इसमें एक वासवी लड़की को चुना जाता है वह नाचकर मरिअम्मा के भजन गाती है और देखने वाले पर थूकती है। एक अन्य उदाहरण में षष्ठी पूजा का वर्णन करेंगें जिसमें शुद्रका द्वारा रचित नाटक मृच्छकटिक के अनुसार शांति पूजा समाप्त करके चारूदत्ता अपने ब्राह्य मित्र मैतेय से अनुरोध करती है कि चौक में जाकर माताओं को बलि अर्पण कर आओ।

अदभुत :– तस्य नयनविस्तारनिमेषप्रेक्षण–रोमा×चश्रृ–स्वेद–हर्ष–साध्वाददान–
प्रबन्ध–हाहाकार–बाहु–वदन–चेलांगुलि–ब्रमणा–दिभिरनुभावै–रभिनयः प्रयोक्तव्यः।

अर्थ :– नेत्रों का विस्तार निर्निमेष प्रेक्षण, रोमांच, अश्रृ, स्वेद, हर्ष, साध्वाद देते ही चले जाना ;हंसी मेंद्ध हाहाकार बाहु मुख वस्त्र अंगुली का भ्रमण। ये सब होंगे अद्भुत में अनुभाव

अदभुत रस :– यह विस्मय स्थाई भाव से होती है। इसका विभाव माया एवं दिव्य पुरूष के दर्शन। इसका अभिनय नेत्रों के विस्फाद रोमांच अश्रू आदि। विष्णु की योग निद्रा रूप में माँ उसकी नींद एवं योग माया की शक्ति है। काली जो मुण्डो की माला पहनती है। वह हिन्दी की वर्णमाला है। श्ताक्षी जो सौ नेत्रों वाली के रूप में दर्शन देती हैं। जगतजननी विश्व व्यापी देवी जो हज़ार हाथ काली में पूजा की जाती है। ऐसी ही बौद्धों की देवी गुआन सी चिन्ह को दया की देवी के रूप में हज़ार हाथों से आशोवाद देती देखी जाती है एवं अधनारीश्वर के रूप में शिव एवं पार्वती को दिखाया गया है।

शान्त : न यत्र दुःखं न सुखं न द्वेषो नापि मत्सरः।
स्मः सर्वेषु भूतेषु स शान्तः प्रथितो रसः।।

अर्थ : शांत नामक रस ऐसा रस है जिसमें न रहता दुख और न सुख न रहता द्वेश और न मत्सर। सभी भूतों के प्रति समक्त बुद्धि रहती है। इनके अतिरिक्त जो नवां रस माना गया है वह हैं शान्त

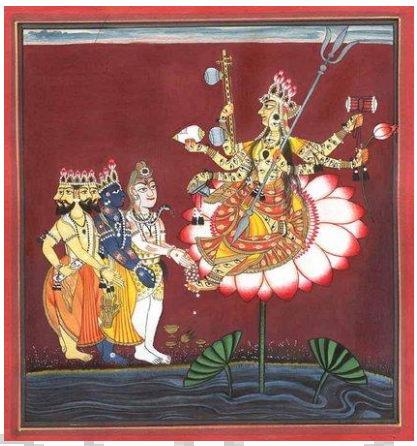

शान्त रस : इसका स्थाई भाव है शम और फल है मोक्ष प्राप्ति संसार को विनाश से बचाने के लिये शिव काली के पैरों के नीचे अपने को समर्पण करते हैं जैसे ही काली का पैर शिव की छाती पर पड़ता है वह शान्त हो जाती है और लज्जा से उसकी जीभ बाहर निकल जाती है। तंत्रिका काली में भवतारिणिक के रूप में शिव पर खड़ी कहा जाता है कि अन्य रूप में माँ के उग्र रूप को शांत करने की ताकत केवल शिव में हैं। ऐसे ही एक और उदाहरण में देवी काली शत्रओं का नाश करके एवं खून पीकर नाचने लगती है। उसको शांत एवं संसार की रक्षा के लिये शिव बाल भैरव के रूप में मैदान में आकर रोने लगते हैं काली मृत्यु और जन्म दोनों की अध्यक्षता करते हुऐं अपने शुद्धतम रूप में देवी हैं।

ज्ञानेन्द्री एवं कर्मेन्द्री के संयम से उत्पन्न आत्मज्ञान से सदैव युक्त शान्त रस है इसमें सभी प्राणियों का सुख और हित सुरक्षित रहता है। इस प्रकार रसों की न तो मान्य है नौ से अध्कि और न मान्य हैं कम भोजराज ने वात्सल्य को रस मानना चाहा है। और आनन्द वर्धन के लगभग समकालीन रूद्रट ने प्रेयान को चाहे हम कल्पना को रस माने या वात्सल्य को रस मानें माँ का प्रतिरूप विभिन्न स्वरूपों में दृष्टिगोचर होता है। इसलिय अंत में माँ को मैं सभी रूपों में समर्पित करता हूँ।

ग्रन्थसूची

[1]. Rasa by susan L.
[2]. Rasa Shastra by Andrew M.
[3]. Rasa Yatra by Mallikaarjun
[4]. Natyashastra, pg. No. 100, written by Rewaprasad Dwivedi
[5]. Granths of Yajur Veda

इंटरनेट संदर्भ

[1]. http://www.vishvarupa.com/print-information-about-kali.html
[2]. http://sivasakti.com/tantra/dasa-maha-vidya/kali/
[3]. http://enfolding.org/wikis-4/tantra-wikiwikis-4tantra-wiki/tantra_essays/rasa-theory/
[4]. https://www.boddunan.com/articles/education/24-arts-a-science/4806-natyashastra-and-the-nine-rasas.html
[5]. https://www.mygov.in/sites/default/files/mygov_145095304729153344.pdf